महेन्द्र मलंगिया

महेन्द्र मलंगिया मैथिली नाट्य साहित्यक एक सशक्त हस्ताक्षर छथि। हिनक जन्म मलंगिया (मधुबनी) मे 20 जनवरी 1946 ई0 मे भेल अछि। मैथिल समाजक विभिन्न समस्या पर लिखल हिनक नाटककेँ अभूतपूर्व मंचीय सफलता भेटल। हिनक 'ओकर आँगनक बारहमासा', जुआएल कनकनी, गाम नै सुतेयै, काठक लोक, ओरिजनलकाम, राजा सलहेस, कमलाकातक राम-लक्ष्मण असीता, लक्ष्मण रेखा खण्डित, एक कमल नोर मे, पूष जार की माघ जार, खिच्चड़ि आदि प्रसिद्ध अछि।

हिनक अनेकानेक एकांकी, नुक्कर नाटक ओ रेडियो नाटक लोक प्रिय भेल अछि। मैथिली नाटक ओ एकांकीकेँ राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करौनिहार मलंगियाजी एक सफल सम्पादक छथि।

अनेकानेक संस्थासँ सम्बद्ध मलंगियाजी प्रबोध साहित्य सम्मान, यात्री चेतना पुरस्कार, चेतना समिति सम्मानक संगहि अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थासँ सम्मानित भेल छथि।

प्रस्तुत एकांकीमे गाम-घरक ज्वलन्त समस्या पर विचार कयल गेल अछि। ग्रामीण लोकनि सरकारी सुविधा पर निर्भर करैत छथि। स्कूल भवनक अभावमे धीयापूताक पढ़ाइ सुचारू ढंगसँ नहि होइत अछि। मास्टर साहेब ग्रामीण लोकनिकेँ लाख अनुनय विनय करैत छथि विद्यालय भवन बनेबाक हेतु, मुदा हुनका सफलता नहि भेटैत छनि। एक गोटे अपन दरबज्जा पर नेना सभकेँ पढ़ेबाक किछु दिन लेल अनुमति तँ देलनि, मुदा ओ बादमे पाछू हटि गेलाह। लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत भेल। इएह एहि एकांकीक कथ्य अछि।

लेभराह अन्हारमे एक टा इजोत

पात्र :

मास्टर, किछु छात्र तथा किछु ग्रामीण।

(मंच; अंग्रेजीक VI अक्षरमे बाँटल। ओहिपर निम्नांकित दृश्य बनाओल-

(बीचवला भागमे दृश्य एक : एकटा गाछ।)

ओकर नीचाँ साफ-सुथरा। गाछक जड़िसँ किछु हँटिक' एकटा बाँहिवला कुर्सीक राखल। गाछ तथा कुर्सीसँ ओङठाओल क्रमशः एकटा छत्ता, छड़ी। कुर्सीक कातमे राखल तीनटा रजिस्टर। तीन पाँतीमे छोट-छोट बोरासभ ओछायल। पहिल पाँतीक बोराक अग्रिम भागपर किताब तथा कापी। एम्हर दुनू पाँतीक बोराक अग्रिम भाग पर सिलेट, कापी तथा किताब।

एक कातक भागमे दृश्य दू : एकटा छोट-छीन दलान। ओहिमे एकटा चौकी तथा आर्मबेंच। दलानेक एक कोनमे किछु घास-पात। चौकीपर आछाओन तथा गेरूआ मोड़ल राखल।

दोसरा कातक भागमे दृश्य तीन : एकटा घरक बाहरी दुआरि जे चाहक दोकानक रूपमे व्यवहार कयल जाइछ। कोइलाक चूल्हिपर दूटा चाहक केटली तथा दूधक सस्पेन चढ़ल। एक्केटा तख्ताक एकटा मचान बनाओल। ओहिपर सात आठ टा शीशाक छोटका गिलास, चीनीक डिब्बा, चाहक डिब्बा तथा चाहक छन्नी राखल। एकटा टेबुलपर दुटा बोइयाममे बिस्कुट तथा पानक सरमजाम सभ राखल। दुआरिक निच्चाँमे दूटा बेंच तथा दूटा पुरान कुर्सी राखल।

पात्रक प्रथम स्थिति पहिल दृश्यपर : मास्टर साहेब कुर्सीपर आ छात्र सभ बोरापर बैसल अछि। किछु छात्रक आगूमे किताब, कापी आ सिलेट छैक।

(प्रकाशक स्थिति : मात्र दृश्य एक आलोकित होइछ, दृश्य दू आ तीन पर अन्हार)

पर्दा हँटैत अछि

मास्टर – (निचला रजिस्टर उठा क') ..... आब वर्ग तीनक विद्यार्थी सभ हाजरी बजै जाइ जो।

(पछिला पाँतीक छात्र सभ किछु साकांक्ष भ' जाइछ, मुदा बिचला आ

अगिला पाँतीक छात्र सभ कचबच करैत अछि ।. छड़ीसँ कुर्सीक पौआ ठोकैत हल्ला बन्न कर, नहि तँ पिटबौक।)

(सभ छात्र शान्त भ' जाइछ। रजिस्टर उघारिक' हाजरी लैत) रौल नम्बर एक।

छात्रएक – मास्टर साहेब! ओ नहि आयल।

मास्टर – (रौल नम्बर एक कलम रोपिक') किऐक ?

छात्रएक – ओकर बाबू कहलकैक जे आइ नहि जो।

मास्टर – से किऐक ?

छात्रएक – मेघ लागल छैक। ओहिठाम गीदड़ बनबाक काज नहि छैक।

मास्टर – एखन कहाँ वर्षा होइत छैक जे ?

छात्र दू – (दृश्य दू दिस आङुरसँ संकेत करैत) हे मास्सहेब ! रजबाक दलान दिस देखियौ, केहन जोर मेघ उठलै - ए।

(सभ छात्र ओम्हरे तकैत अछि आ अपन-अपन किताब सम्हार' लगैछ।)

मास्टर – तोँ सभ हल्ला ..... रे, किताब किऐक सम्हारैत छेँ ?

छात्र तीन – मास्टरसाहेब ! वर्षामे भीजि जायब।

मास्टर – वर्षा जखन औतेक तखन । एखन की थिकैक ?

छात्र तीन – मास्साहेब ! ओहू दिन इऐह कहलिऐ आ हमसभ भीजि गेलहुँ।

मास्टर – बच्चामे सहल रहतौक तँ बढ़िया होयतौक।

(छात्रसभ एक दोसराक मुँह ताक' लगैछ। मास्टर साहेब पुन: हाजरी लैत छथि। छात्रसभ उठि-उठिक' उपस्थित श्रीमान् करैत अछि।)

रौल नम्मर पाँच।

छात्र दू – मास्साहेब ! ओ आब एहि स्कूलमे नहि पढ़त।

मास्टर – एहीमे नहि पढ़त तँ कत' पढ़त ?

छात्र दू – मधुबनी । ..... ओ कहलकै जे एहिठाम इसकूल-तिसकूल छैक नहियेँ। बरिसातमे बड़ बाधा होइत छैक।

छात्र तीन – हँ, मास्साहेब ! ओकर बाबू सभ दिन काजपर जाइत छैक। ओकरो लेने जयतैक आ लेने औतैक।

मास्टर – हूँ; हमर एहि गाममे जमीन अछि जे हम स्कूल बना दियौनि।

(छात्रसभक पुनः कचबची बढ़ि जाइत छैक। मास्टर साहेब छड़ीसँ कुर्सीकेँ बजबैत छथि।)

हल्ला शान्त ! ..... हल्ला शान्त !!

(सभ छात्र चुप भ' जाइत अछि। हाजरी लैत) रौल नम्मर सात .....रौल नम्मर सात।

छात्र चारि – मास्साहेब ! ओहो भरिसक नहि पढ़त। ओकर माय कहैत छलैक जे गामक स्कूलमे पढ़ाई तढ़ाई होइत छैक नहियेँ आ ..... बेसी छुटिये रहैत छैक।

मास्टर – (किंचित क्रोधसँ निच्चाँमे रजिस्टरकेँ पटकैत) स्कूलक कारणेँ पढ़ाई नहि होइत छैक तँ हम की करियौक ?..... कपार फोड़िक' मरि जाउ ?

(छात्र मास्टर साहेबक मुँह ताक' लगैछ)

छात्र पाँच – मास्साहेब ! स्कूलक घर कहिया बनतैक ?

मास्टर जहिया घोड़ा पाउज करतैक।

छात्र पाँच – घोड़ा कहिया पाउज करतैक ?

मास्टर – जहिया स्कूल लेँ क्यो जमीन देतैक।

(छात्र एक आ दू किछु गप्प करैत देखल जाइछ। आवेशक तनाव मुँहपर आनिक') रे, गप्पे करबाक छौक त' एहिठाम किऐक अयलेँ अछि ?

छात्र एक – (छात्र दूकेँ संकेत क') ई कहैत छैक जे घोड़ा पाजु नहि करैत छैक।

छात्र दू – मास्साहेक! अहाँ काल्हि कहलिऐक नहि जे .....

मास्टर – हँ हँ, ठीके कहलिऐक । घोड़ा पाजु नहि करैत छैक।

छात्र तीन – मास्साहेब ! अहाँ हमरासभकेँ ठकैत छी। स्कूल नहि बनतै।

मास्टर – आशा तँ हमरो नहि अछि, मुदा .....

(मास्टर साहेब उठि क' छात्रक चारू भाग टहलि जाइत छथि। पुनः

अगिला पाँतीक छात्रक आगूमे ठाढ़ भ' जाइत छथि । अगिला पाँतीक छात्र सभसँ) तौँ सभ कल्हुके सिखौलहाकेँ दोहरा क' लिख। तखन आगू देखा देबौक। (दोसर पाँतीक छात्रसँ) तौँ सभ अभ्यास बीसक हिसाब बना।

(दुनू पाँतीक छात्रसभ अपन कार्यमे लागि जाइत अछि। मास्टर साहेब आबिक' कुर्सीपर बैसि जाइत छथि)

वर्ग तीनक विद्यार्थी सभ लिखना लबै जाइ जो (छात्र एक उठिक' तेसर पाँतीक छात्रसभसँ लिखनाक कापी असूल करैत अछि)

मास्टर – किऐक रे ?

छात्र चारि – मास्साहेब ! हम लिखने छलहुँ । गामेपर बिसरि, गेलहुँ।

मास्टर – हँ, सभदिन तोहर एहने-एहने बहन्ना होइत छौक । ..... एम्हर अबै।

(छात्र चारि डरसँ सर्द भेल मास्टर साहेब लग जाइत अछि) (छड़ी देखाक') ई छड़ी देखैत छही ?..... दोसर दिनसँ एहन बहन्ना बनयबेँ तँ बड़ पिटान पिटबौ । जो ।

(छात्र चारि मुस्कुराक' पुनः यथावत् बैसि जाइत अछि)

ई बढ़लापर बड़ पैघ नेता होयतैक।

छात्र तीन – मास्साहेब ! जे ठकैत छैक से नेता होइत छैक ?

मास्टर – हूँ।

(छात्र दू सभ कापी असूलिक' मास्टर साहेबक हाथमे द' दैत अछि आ अपने कातमे ठाढ़ भ' जाइत अछि। मास्टर साहेब ऊपर-झापर पढ़िक' दस्तखत कर' लगैत छथि।)।

छात्र चारि – (छात्र तीन दिस संकेत क')। मास्साहेब ! ई हमरा गारि पढ़ै ए।)

मास्टर – (अपनाकेँ कार्यमे व्यस्त रखैत) की रे दारोगा साहेब ! गारि बजैत छेँ हड्डी तोड़ि देबौक।

छात्र तीन – नहि मास्साहेब ! ई झुट्ठे कहै-ए।

मास्टर – (पूर्ववत् स्थितिमे अपनाकेँ रखैत) की रे ओकील साहेब ! ओकालति करबा

छौक ?

छात्र पाँच – (छात्र छौ दिस संकेत क' क') मास्साहेब! ई कहै-ए, हिसाब नहि बनायब।

छात्र छौ – नहि मास्साहेब ! हम बनबैत छी।

मास्टर – नहि, यदि मेहनतिसँ डर लगैत होउक तँ पठा दियौक कोनो हाइस्कूल वा कालेजमे। फाँकी अपन दैत रहि हँ।

छात्र तीन – मास्साहेब !.....

मास्टर – (अकछिक' डाँटल स्वरमे) फेर मास्साहेब-मास्साहेब तखनसँ करैत अछि! आब क्यो मास्टरसाहेब करबँ तँ पिटबौ। चुप-चाप अपन काज कर।

– (कापी सही क' क' दैत छथि । छात्र दू सभकँ बाँटि दैत अछि)

वर्ग तीनक विद्यार्थीसभ एम्हर अबैत जाइ जो ।

– (पछिला पाँतीक छात्रसभ आबिक' मास्टर साहेबकँ घेरि लैत अछि। मास्टर साहेब संकेतसँ सभ छात्रकँ मुँहपरसँ हँटि जाय कहैत छथि । सभ छात्र आगूसँ हँटिक' दुनू कात ठाढ़ भ' जाइत अछि। पोथी उनटाक') शान्तिनिकेतन पढ़बाक छौक ?

एक छात्र – जी

मास्टर – (पोथीक कोनो निर्दिष्ट पन्ना उनटाक') शान्तिनिकेतनक माने होइत छैक शान्तिक घर। ई बंगालक बोलपुरमे छैक । ..... एहि विज्ञानक युगमे ई अपना ढंगक प्रथम स्कूल थिक। ..... एहि स्कूलमे विद्यार्थीसभ गाछपर आ गाछ तर बैसिक' पढ़ैत अछि। .....एकर स्थापना विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर कयलनि। ..... बुझलही ?

सभ छात्र – जी !

– (सभ छात्र अपन-अपन स्थानपर जाक' बैसि जाइत अछि। मास्टर साहेब उठिक' अगिला पाँतीक छात्रसभक सिलेटपर किछु-किछु लिखैत छथि । बीच-बीचमे 'एहिना क' लिख' बजैत छथि ।)

छात्र एक – (छात्र दू दिस संकेत क') मास्साहेब ! ई हमरा कहै-ए तोहर बाप रवीन्द्रनाथ छथुन।

छात्र दू – नहि मास्साहेब ! पहिने इऐह हमरा कहलक।

(मास्टर साहेब उठिक' दुनू छात्र लग जाइत छथि)

मास्टर – की रे ?

छात्र एक – मास्साहेब ! ई हमरा .....।

छात्र दू – (छात्र एकक बात लोकैत) नहि मास्साहेब ! पहिने इऐह हमरा.....।

मास्टर – (छात्र दूक बात लोकैत) हम सब बुझैत छिऐक, तोहरसभक बाप रवीन्द्रनाथ छथुन।

(दुनू छात्र मास्टर साहेबक मुँह ताक' लगैछ)

मुँह की तकै' छँ ? जहिना रवीन्द्रनाथ ठाकुर शान्ति-निकेतनक स्थापना कयलनि, तहिना तोरोसभक बाप एहि स्कूलकेँ शान्तिनिकेतनक रूपमे राख' चाहै छथुन।

छात्र तीन – मास्साहेब ! हमरा पोथीपर फूही पड़लै' ऐ

(छात्र तीनक पोथी कात-करौटक छात्रसभ देख' लगैछ। मास्टर साहेब मेघ दिस तकैत छथि।)

छात्र चारि – मास्साहेब ! हमरो कापीपर पड़लै-ऐ।

(सभ छात्र हड़बड़ा जाइत अछि आ अपन-अपन पोथी सम्हार' लगैछ। कचबची बहुत बढ़ि जाइत अछि।)

मास्टर – रे ..... एना .....।

छात्र पाँच – (दृश्य दू दिस संकेत करैत) मास्साहेब ! बाप रे बाप देखियौ केहन जोर मेघ ?

(मेघ गरजबाक ध्वनि सुनल जाइछ। सभ छात्र जे पंक्तिबद्ध छल, से अस्त-व्यस्त भ' जाइत अछि।)

छात्र एक – मास्साहेब ! हमसभ भीजि जायब। जल्दी छुट्टी द' दियौक।

मास्टर – .....उँ.....? उँ.....? उँ..... जाइ जो।

(सभ छात्र अपन-अपन पोथी आ बोरा लऽ कऽ जहिँ-तहिँ पड़ाइत अछि।

एहि क्रममे किछु छात्रक पोथी छूटि जाइत छैक। मास्टर साहेब विवशताभरल आँखिसँ सभ वस्तुकेँ सैँत' लगैत छथि। प्रकाश दृश्य एकपरसँ दृश्य दूपर चल जाइत अछि। ग्रामीण एक दलानमे प्रवेश करैत अछि। ओ मोड़ल ओछाओनकेँ पसारिक' सुतबाक उपक्रम करैछ। मास्टर साहेब रजिस्टर, किताब, छत्ता तथा छड़ी ल' क' दलानमे अबैत छथि।)

ग्रामीण एक – (कड़गर स्वरमे) मास्टर साहेब ! हम अपन दलानपर नहि पढ़बऽ देब।

मास्टर – हम वर्षा दुआरे अयलहुँ अछि।

ग्रामीण एक – विद्यार्थीसभ कहाँ गेल ?

मास्टर – सभ चल गेलैक।

(मास्टर साहेब रजिस्टर, पोथी तथा छड़ी' आर्मबेंचपर राखि दैत छथि। छता आर्मबेंचक पाछुमे लटका दैत छथि। ग्रामीण एक कोनटामे हुलकी मारिक' बाहरमे किछु तकैत अछि।)

ग्रामीण एक – हमरा भेल जे अहाँ फुसिये कहैत छी।

(मास्टर साहेब आर्मबेंचपर बैसि जाइत छथि)

ग्रामीण एक – हूँ, चिलकाक लाथेँ तँ चिलकाउर जीवे करैत छैक।

मास्टर – अपनेक कहबाक तात्पर्य नहि बुझलहुँ ?

ग्रामीण एक – वर्षा आबि गेलासँ अहुँकेँ आराम भेटिये जाइत अछि। एम्हर मङनीमे अपन दरमाहा .....।

मास्टर – (विक्षुब्ध भ' क' ग्रामीण एक दिस तकैत) तँ एहि वर्षामे हम की करियौक ? एहिमे यदि विद्यार्थीसभ पढ़य तँ पढ़ा दिऐक।

ग्रामीण एक – नहि, नहि, एहिमे कोना पढ़तैक ?

मास्टर – तखन अपने की कहल गेलैक जे.....। एखन अबैत देरी कहलहुँ जे दलानपर नहि पढ़ब' देब।

ग्रामीण एक – हम दलानपर कोना पढ़ब' देब ? लोक दलान बन्हने अछि अपन सुख ले' कि ..... ! की गाममे आर दलान नहि छैक ?

मास्टर – सभ तँ सैह कहैत छथि।

(मास्टर साहेब रजिस्टर उनटाक' किछु-किछु भर' लगैत छथि)

ग्रामीण एक – तखन हमरे कोना कहैत छी जे.....। सभसँ बुड़िबक हमहीँ छी ?.....की हमरे धीया-पूता पढ़ैत अछि ?

मास्टर – (अपनाकेँ कार्यमे व्यस्त रखैत) आखिर बच्चा सभ तँ अपनेक गामक थिक।

ग्रामीण एक – मूड़ी मारू बच्चासभकेँ । ओहि दिन पड़ल रही से ततेक ने कचबच कयलक जे.....। तखन दलान बान्हिक' कोन सुख भेल ?

(चुप्पी । ग्रामीण एक डाँड़सँ तमाकू बाहरक' लगब' लगैत अछि)

एक दिन पढ़ब' देलहुँ, दू दिन पढ़ब' देलहुँ..... आ एना जे सभ दिन हमरे दलानपर कहब से तँ पार नहि लागत।

(चुप्पी। मास्टर साहेब दोसर रजिस्टर उनटा क' किछु लिख' लगैत छथि ! ग्रामीण एक तमाकू लगबैत रहैत अछि। एहि क्रममे तमाकू गर्दा नाकमे लगा लैत अछि।)

सरकार एकटा स्कूल बना देतैक से नहि होइत छैक।

मास्टर – अपनेलोकनिक काज अछि से तँ करिते नहि छी। तखन सरकारकेँ कोन गर्ज छैक जे.....

ग्रामीण एक – हमर व्यक्तिगत रहैत तँ भ' गेल रहितैक, मुदा ई तँ छैक दसगर्दाक काज, तखन दसगर्दाक काज ले' हमहीँ किऐक.....

मास्टर – एहन भावना राखि कोना कोनो दसगर्दाक काज होयत?

ग्रामाण एक – नहि होयतैक तँ नहि होउक। (ग्रामीण एक ठोरमे तमाकू राखि क' चौकीपर पड़ि रहैत अछि) सरकारो आन्हर अछि। जत' स्कूल नहि छैक ओत' मास्टर किऐक ध' दैत छैक?

मास्टर – रोकि देल जाओ ने !

ग्रामीण एक – नहि, नहि हम अहाँ द' नहि कहलहुँ। कतेको ठाम एहिना चलैत छैक।

मास्टर – जाहि ठामक जनते चौपट्ट छैक, ओहि ठाम .....

ग्रामीण एक – एह ! घुमा-फिराक' जनतेक दोष।

मास्टर – सरकारक एक्को पाई दोष छैक तँ..... (किछु क्षणक बाद) दोष एतबे छैक जे नि:शुल्क शिक्षा देबाक हेतु शिक्षक द' दैत छैक।

(ग्रामीण एक पट द' बिच्चे दलानपर थूक फेकैत अछि। मास्टर साहेब कन्हुआकेँ देखि पुन: कार्यमे व्यस्त भऽ जाइत छथि।

ग्रामीण एक – मास्टर साहेब ! एक टा काज भ' सकैत अछि ?

मास्टर – (रजिस्टर बन्न क' क' उत्सुकतासँ ग्रामीण एकक मुँह तकैत) की ?

(ग्रामीण एक उठिक' बैसि जाइत अछि)

ग्रामीण एक – हम दलान पढ़ब' ले' देब। मुदा, सरकारसँ लिख-पढ़ी क' भाड़ाक रूपमे किछु..... अहाँ तँ देया सकैत छी!

मास्टर – ई कोना भ' सकैत छैक ! एहन नियमे नहि छैक जे .....।

ग्रामीण एक – सैह हम कहलहुँ जे..... यदि.....।

मास्टर – एहन कोनो उपाय रहितैक तँ हम बाज नहि आयल रहितहुँ.....तखन एकटा भ' सकैत छैक।

ग्रामीण एक – (उत्सुकतासँ मास्टर साहेबक मुँह तकैत) की ?

मास्टर – विद्यार्थीसभ एक एक रुपैयाक महिना देअय तँ..... (किछु क्षणक बाद) मुदा ओहो होब' वला नहि अछि। छमाही परीक्षाक फीस एखन धरि कैक टा विद्यार्थी रखनहि अछि। (किछु क्षणक बाद) दोसर, गार्जियनोसभ.....

ग्रामीण एक – नहि होब' वला अछि तँ चर्चे छोड़ू'

(मास्टर साहेब उठिक' कोनटा देने किछु तकैत छथि। पुन: बीच दलानमे अबैत दथि)

मास्टर – एकटा काज कयल ने जाओ।

ग्रामीण एक – की ?

मास्टर – पार लगाक' अपने दलान देल ने जाओ!

ग्रामीण एक – (किछु सोचैत) से.....से भ' सकैत अछि। (पुनः किछु सोचैत) मुदा, ओहन दलान तँ गाममे तीनिये ँ चारिटा अछि।

मास्टर – जतबे छैक, ओतबेमे पार लागि जयतैक।

ग्रामीण एक – (पुनः किछु सोचिक') हँ यौ मास्साहेब! सत्त पूछी तँ दलान देबामे कोनो हर्ज नहि, 'मुदा .....।'

मास्टर – की ?

ग्रामीण एक – आब देखियौ-भादवमे आँसु-मड्डुआ होयत-फेर अगहनमे धान-तान रहत। सभ हमर दलानेपर रहैत छैक। विद्यार्थीसभ केहन बानर होइत छथि से तँ बुझले अछि।

मास्टर – एकर जिम्मा हम लैत छी। एक्को रत्ती किछु नोकसान नहि होयत।

ग्रामीण एक – एह ! अपने कहब से मानब !

(नेपथ्य सँ- 'हे..... हे.....हे.....घुम रे.....घुम रे.....ई चमरा पेटक शब्द सुनल जाइछ। ग्रामीण एक उठिक' कोनटा देने तकैत अछि।) ई मालबला.....। (किछु क्षणक बाद बीच दलानमे आबिक') मेघ बहि गेलैक । बेकारे छुट्टी द' देलिऐक।

मास्टर – फूँही पड़' लगलै तँ हम की करितिऐक ?

ग्रामीण एक – एक-दू टा फूँहीसँ विद्यार्थीक देह नहि गलि जैतैक।

मास्टर – हम नहि जनलिऐक जे फूँहिये पड़िक' रहि जयतैक।

(मास्टर साहेब अपन सभ समान सम्हारैत छथि । ग्रामीण एक चौकीपर बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण एक – फेर पढ़ब' जाइत छिऐक ?

मास्टर – विद्यार्थीसभ आब नहि ओतैक।

ग्रामीण एक – कतेक बाजल अछि ?

मास्टर – सी सामान पजियाक', (घड़ी देखैत) डेढ़।

मास्टर – (ग्रामीण एककेँ कन्हुआ क' देखि) हूँ।

(मास्टर साहेब चल जाइत छथि। ग्रामीण एक चद्दरि तानिकेँ सुतबाक उपक्रम करैत छथि)

ग्रामीण एक – एह ! क्यो देख' वला नहि।

(ग्रामीण एक मुँह झाँपिक' सूति रहैत अछि। दृश्य दूपर अन्हार पसरि जाइछ । किछु क्षणक बाद ग्रामीण एक उठिक' चल जाइत अछि। दृश्य तीनपर पहिने ग्रामीण सात आबि जाइत अछि। ओ अपन चाहक केटलीकेँ छूब'-छाप' लगैछ। तकर बाद एक-एक ग्रामीण सभ आबिक' क्रमश कुर्सी आ बेंचपर बैसैत अछि) तत्पश्चात् प्रकाश धीरे-धीरे दृश्य तीनपर पसरि जाइछ।

ग्रामीण दू – हमरालोकनि किऐक बजाओल गेलहुँ अछि ?

ग्रामीण एक – हमरा कहलनि जे अपनेलोकनि चलू, हम आर लोककेँ बजौने अबैत छी ?

(मास्टर साहेब आबिक' ठाढ़ भ' जाइत छथि आ एक बेर सभकेँ तकैत छथि ।)

मास्टर – सभगोटे तँ आबिये गेलहुँ। एक दू गोटे आर अबैत छथि। किछु गोटे कहलनि जे हमरा फुर्सतिये नहि अछि।

ग्रामीण एक – तखन कोना भेल ?

मास्टर – हम जबर्दस्ती कोना अनियौन ? औताह तँ अपने विचारेँ ।

(मास्टर साहेब बीचमे चुक्कीमाली भ' क' बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण दू – एह ! ऊपरे किऐक ने बैसलहुँ ?

ग्रामीण दू पहिने धकियाक' जगह बनयबाक प्रयास करैछ, मुदा जगह नहि होयबाक कारणेँ अपने उठबाक उपक्रम करैत अछि।

मास्टर – नहि, नहि ..... अपने बैसल जाओ।

(मास्टर साहेब उठिक' आधा उठल ग्रामीण दूकेँ बैसबैत छथि।)

ग्रामीण तीन – ई बैसार तँ जेठरैयतेक दरबज्जापर करितहुँ । एहिठास बैसौक दिक्कत .....

ग्रामीण चारि – ओहिठाम लक्ष्मणजी नहि जैतथिन ।

ग्रामीण पाँच – अयँ ! एखन धरि भँड़ा -महिसिक कानि छनिहँ।

ग्रामीण दू – नहि, से तँ इऐह ठीक छैक। एहिठाम चाहो पीबाक लाथेँ.....आ ओना आइ-काल्हि के जाइत छैक मिटिंगमे ?

(ग्रामीण एक आ दू फूसुर-फूसुर किछु गप्प करैत देखल जाइछ । मास्टर साहेब पुन: ओहिना बैसि जाइत छथि।)

ग्रामीण तीन – बेदा भाइ ! तमाकू दहक ।

ग्रामीण एक – अपने दहक।

(ग्रामीण एक डाँड़सँ तमाकूक डिब्बा बाहर करैत अछि आ ओकरा खोलिक' देखा दैछ) नहि छह।

ग्रामीण तीन – हमर एकदम तीत लगैत छैक।

ग्रामीण एक – तोँ लोककेँ ठकबाक नीक उपाय सोचने छह।

ग्रामीण तीन – आ तोँ नहि ? दहक दोसर डिब्बामे सँ।

(ग्रामीण एक आ तीन क्रमश: अपन दाँत चियारि दैत अछि।)

ग्रामीण एक – तमाकू तँ चाह पीबिक' खयबामे बढ़ियाँ लगैत छैक।

ग्रामीण चारि – पिअयबहक ?

(ग्रामीण सात देबालमे ओङठिक' ठाढ़ भ' जाइत अछि। मास्टर साहेब बिचला आङुरसँ निच्चाँमे किछु लिख' लगैत छथि।)

ग्रामीण एक – हम ? हमर कोन माय मुइली अछि ?

ग्रामीण चारि – तँ .....।

ग्रामीण दू – (ग्रामीण चारिक मुँहक बात लोकैत) सत्त पूछी तँ ई मास्टरे साहेबक काज छनि। तेँ हिनके पिअयबाक चाही।

ग्रामीण पाँच – हिनक कोन काज छनि ? स्कूल बनतह तँ अपनेसभक बच्चा पढ़तह।

ग्रामीण दू – से तँ बुझलहुँ मुदा, ... नहियो छैक तँ बच्चासभ कहुना क' पढ़िये लैत अछि।

ग्रामीण एक – बाहरमे हिनका अवस्से लोक कहैत होयतनि जे कहेन स्कूलमे छी जकरा एकटा घरो नहि छैक। ..... तखन हिनको कोनादन लगैत होयतनि। बनि गेलासँ हिनको छाती फूलि जयतनि जे .....।

ग्रामीण दू – से तँ ठीके।

ग्रामीण तीन – छाती फुलनि वा नहि, मुदा आराम हिनके होयतनि। तँ चाह आइ इऐह पियाबथु।

मास्टर – (बिक्षुब्ध नजरि सभ ग्रामीणपर फेरिक') बनबह हो चाह।

ग्रामीण सात – कैकटा ?

मास्टर – गनि लहुन ने !

(ग्रामीण सात गनबाक क्रममे सभकेँ देखि लैत अछि आ अपन काजमे जुटि जाइछ। ग्रामीण छओ प्रवेश करैत अछि। एकटा कुर्सीपर बैसल ग्रामीण उठि जाइछ। ग्रामीण छओ ओहिपर बैसि जाइत अछि। ग्रामीण चारि आ पाँच किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

(ग्रामीण सातसँ) राजकुमार ! एकटा बैस' ले' किछु लाबह।

(ग्रामीण सात नेपथ्यसँ एकटा स्टूल आनिक' द' दैत अछि। कुर्सी परसँ उठल व्यक्ति स्टूलपर बैसि जाइछ। ग्रामीण सात पुनः अपन काजमे लागि जाइत अछि।)

ग्रामीण छओ – ई गाम थिक ! एकटा स्कूल नहि बनि रहल अछि।

मास्टर – यदि स्कूल नहि बनलैक तँ स्कूलक स्वीकृतियो तोड़िक' दोसर ठाम ध' देतैक।

ग्रामीण छओ – तखन आँखि खुजतैक लोकक।

ग्रामीण पाँच – मास्टरो साहेबकेँ बढ़ियाँ भ' जयतनि। चल जयताह एहि किच्किचसँ दोसरठाम।

मास्टर – (ग्रामीण सातसँ) एकटा चाहक कोटा आर बढ़ा दहक।

ग्रामीण चारि – की यौ मास्टर साहेब! सभ अबैत गेलाह ?

ग्रामीण दू – के अयलाह आ के नहि अयलह से तोँ नहि देखैत छहक ?

ग्रामीण चारि – एह ! बुड़िबक जकाँ गप्प नहि ने करी ! आखिर एहि बैसारक आयोजन तँ मास्टरे साहेब कयलनि अछि। तँ हिनकासँ पूछब हमर उचित ।

ग्रामीण दू – बेस, तोँही काबिल छह। आर सभ एम्हर बुड़िबके छैक।

(ग्रामीण पाँच आ तीन किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

ग्रामीण छओ – आब गप्प सप्प छोड़ह! जाहि काज ले' जमा भेलहुँ अछि से करह !

ग्रामीण पाँच – (गप्प बन्नक') कह' ने ! हम तैयार छी ।

ग्रामीण एक – बढ़िया होयत जे चाहक सङे गप्प-सप्प शुरू करितहुँ। (ग्रामीण सातसँ) की हौ ? चाह भ' गेलह ?

ग्रामीण सात – हँ, हँ, भ' गेलह ?

(ग्रामीण सात गिलासमे चाह छान' लगैत अछि।)

ग्रामीण छओ – तावत गप्पो चलय तँ हर्ज की ?

ग्रामीण चारि – हर्ज तँ कोनो नहि। ..... की यौ मास्टर साहब ! हमरा लोकनिकेँ किऐक बजौलहुँ अछि ?

मास्टर – सभ बात तँ अपनेलोकनि जानिते छी ।

ग्रामीण चारि – हमरालोकनि तँ जनैत छी बहुत किछु। तथापि अहाँ कहब तखन ने जे .....।

(ग्रामीण एक आ दू किछु गप्प करैत देखल जाइछ।)

ग्रामीण छओ – एह, गप्प नहि करह। सुनह !

मास्टर – समस्या अछि स्कूलक घरक ।..... घरक अभावमे कोन -कोन दशा भ' रहल अछि से तँ अपनेलोकनिकेँ बुझले अछि। तँ अपने लोकनिसँ प्रार्थना अछि जे कतहु स्कूलक हेतु पाँच धूरि भूमि भेटय आ केहनो घर अपने लोकनि ठाढ़ क' दी !

(सभ ग्रामीण मूड़ि गोति लैत अछि। चुप्पी । ग्रामीण सात उभेरक हिसाबेँ सभकेँ चाह देब' लगैछ। सभ मूड़ि गोतिक' चाह पीबि' लगैछ।)

ग्रामीण छओ – (मूड़ी उठाक') सुनैत नहि गेलहक ?

ग्रामीण पाँच – (मूड़ी उठाक') सभ सूनलिऐक।

ग्रामीण चारि – (मूड़ीक उठाक') सभसँ पहिने जगह टेबल जाय।

ग्रामीण तीन – (मूड़ी उठाक') स्कूल जोगरक तँ कयकटा ने जगह छैक।

ग्रामीण छओ – बाजह ने !

ग्रामीण तीन – से तोँ नहि जनैत छहक ?

(चुप्पी । किछु गोटे कनाफुसकी कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण छओ – जगह तँ कैकटा ने छैक -श्यामजीक जामुन तर, छेदू भाइक बसेढ़, सुन्दर लालाजीक बराड़ी, मन्नूक भीड़ी महेशक बारी .....।

ग्रामीण एक – आ तोहर कलमक कात नहि ?

ग्रामीण छओ – से हम कहाँ कहैत छियह नहि ..... ? ओहो छैक।

(चुप्पी। सभ गोटे चाहक चुस्की लैत एक दोसरक मुँह तकैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – एना कयने काज नहि चलतह। खेतो-पथार गेनाइहरमाद होइत अछि।

ग्रामीण छओ – तँ।

(चुप्पी। किछु गोटे चाह पीबिक' खाली गिलास निच्चाँमे राखि दैछ)

की ओ सुन्दर ाल जी ?)

ग्रामीण तीन – हमहूँ इऐह प्रश्न अहाँसँ करैत छी !

ग्रामीण छओ – तखन तँ बेकारे बेसैत गेलहुँ। छोड़ि दिय'।

ग्रामीण तीन – हूँ। अपन बेरमे छोड़ि दिय'।

ग्रामीण चारि – मन्नू बजैत नहि छह ?

ग्रामीण दू – तोँही बाजह ने !

ग्रामीण चारि – स्कूल नहि बनैक ?

ग्रामीण दू – अबस्स बनैक। दैत जइयौक जगह।

ग्रामीण तीन – से ककरा कहैत छिऐक ? अहीँ दियौक ने ? बड़ टोनगर जमीन अछि।

ग्रामीण चारि – की, हमरे बच्चा ओहि स्कूलमे पढ़त ?

(ग्रामीण चारि बेंचपरसँ उठिक' बिच्चेमे चुक्कीमाली भ' बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण पाँच – से कहाँ क्यो कहैत अछि जे अहींक बच्चा पढ़त ? तखन जथेवाला जगह देथिन कि ..... (किछु क्षणक बाद) की यौ ! बेदा भाई ?

ग्रामीण एक – एकटा हमहीँ अहाँकेँ सुझैत छी।

(ग्रामीण एक ग्रामीण चारि जकाँ बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण एक – द' ने दियौक अहीँ?

ग्रामीण पाँच – हमरा देबामे कोनो हर्ज नहि, मुदा हम ओहिठाम बास ल' जायब।

(ग्रामीण पाँच ग्रामीण एक जकाँ उठिक' बैसि रहैत अछि।)

ग्रामीण एक – वैह बात तँ हमरो सङ अछि। ओहिठाम सभकेँ निर्वाह नहि होयतैक।

ग्रामीण दू – हमर समस्या ई अछि जे हमरा ओहिठाम मालक घर ल' जयबाक अछि।

(ग्रामीण दू ग्रामीण पाँच जकाँ उठि क' बैसि जाइत अछि।)

ग्रामीण तीन – हम तँ जमीन द' दितहुँ , मुदा घरमे सभक विचार नहि छैक'। तखन हम ओहि ले' घरमे फूट करू से .....।

(ग्रामीण तीन उठि जाइत छथि।)

ग्रामीण चारि – हम खरिहान ओहिठाम नहि करितहुँ तँ भूमि देबामे कोनो हर्ज नहि छल।

ग्रामीण छओ – हम यदि दैत छी तँ हमर पर्दा-पोश मारल जाइत अछि।

(चुप्पी। सभ एक दोसरसँ फुसुर-फुसुर गप्प कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण एक – की औ मास्टर साहेब ! पानो चलतैक ?

(मास्टर साहब कोनो उत्तर नहि दैत अछि।)

ग्रामीण दू – मास्टर साहेबक काज होइते नहि छनि तँ .....।

ग्रामीण एक – हमरा की कहैत छह ?

ग्रामीण छओ – सभ तँ एहिना कहैत छैक ।

मास्टर – (विक्षुब्ध स्वरसँ) पान लगाबह।

(ग्रामीण सात पानें लगब' लगैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – हमर एकटा गप्प सुनह। सभमे चन्दा लगा दहक आ कतहु भूमि कीनि लैह।

ग्रामीण एक – एखन लोक खाय ले' मरैत अछि आ चन्दा दैत छैक।

ग्रामीण दू – पहिने तँ धनिकहे नहि देतैक।

ग्रामीण तीन – ई बात नहि चलतह। मामूली गमैया पूजामे बेहरी दैतेह ने रहैत छैक आ .....।

ग्रामीण चारि – तँ ओहिमे तँ एक्के -डेढ़ रुपैया लगैत छैक।

(चुप्पी। सभ एक दोसरसँ फुसुर-फुसुर गप्प कर' लगैत अछि।)

ग्रामीण एक – (ग्रामीण दू सँ) मन्नू भाई । तोहर थान तर कादो भ' गेलह ?

ग्रामीण दू – ओह! पानिये ने लगैत छैक।

ग्रामीण छओ – एह! गप्प लेढ़ायल जाइत छह।

ग्रामीण एक – करह ने गप्प। हम तैयारे छी ।

(चुप्पी। ग्रामीण सात सभकेँ पान, सुपारि आ, जर्दा दैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – ने क्यो जगह देतैक आ ने चन्दा। तखन कोना बनतैक स्कूल ?

ग्रामीण एक – नहि बनतैक तँ नहि बनौक। हमरा धीया-पूताकेँ पढ़यबाक होयत तँ दरबज्जेपर मास्टर राखिक' पढ़ा लेब।

ग्रामीण दू – तँ।

ग्रामीण तीन – (पचद' पीक फेकैत) तोरासँ के मौर अछि ?

(ग्रामीण तीन उठि जाइत अछि)

ग्रामीण एक – हम तोरा नहि कहै छिएह।

ग्रामीण तीन – आ हम तोरा कहलियह अछि ?

ग्रामीण पाँच – (पीक फेकिक') मारि करैत जाह।

(ग्रामीण चारि पीक फेकि प्रस्थान करैत अछि।)

ग्रामीण छओ – जाइत छह ?

ग्रामीण चारि – (ठाढ़ भ' क') तँ । मङनीमे काज हरमाद होइत अछि।

(ग्रामीण चारिक प्रस्थान तथा ग्रामीण तीन जयबाक हेतु डेग बढ़बैत अछि।)

ग्रामीण पाँच – तोहूँ जाइत छह ?

ग्रामीण तीन – नहि किछु होइत छैक तँ की करू ? तीनटा बेटा पढ़लक से कोन ई स्कूल छलैक ?

ग्रामीण पाँच – चलह। हमरे की अछि ?

(बेरा-बेरी सभ ग्रामीण चल जाइत अछि। मास्टर साहेब विक्षुब्ध भ' क' सभकेँ तकिते रहित जाइत छथि। ग्रामीण सात खूब जोरसँ भभाक' हँसैत अछि।)

ग्रामीण सात – मास्टर साहेब ! स्कूल बनि गेल ?

(मास्टर साहेब मूड़ी लटका क' जाय लगैत छथि)

ग्रामीण सात – मास्टर साहेब ! कने बाजार जयबै चाह-चीनी आन'।

(मास्टर साहेब अपन जेबी टोब' लगैत छथि। दृश्य तीनपर अन्हार पसरि जाइछ। प्रकाश दृश्य एकपर चल अबैत अछि। ओही प्रकाशमे गाछसँ टप-टप खसैत पानि आ खाली कुर्सी देखल जाइछ। किछु कालक बाद प्रकाश आस्ते-आस्ते क्षीण भ' जाइत अछि।)

(पर्दा खसैत अछि)

शब्दार्थ

आवेश	–	वेग
विवशता	–	लाचारी
चिलका	–	छोट बच्चा

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न -**

निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू।

(i) मंच पर दृश्य बनल अछि।

(क) एकटा (ख) दूटा

(ग) तीनटा (घ) चारिटा

(ii) चाहक पाइ देलनि -

(क) ग्रामीण एक (ख) मास्टर साहेब

(ग) ग्रामीण पाँच (घ) ग्रामीण दू

2. निम्नलिखित खाली स्थानक पूर्त्ति करू -

(क) कोइलाक चूल्हि पर टूटा चाहक ..... चढ़ल छल।

(ख) घोड़ा कहिया ..... करतैक।

3. निम्नलिखितमे सही/गलतक चयन करू -

(क) गाछक जड़िसँ हँटि क' एकटा टेबुल राखल छल।

(ख) शान्तिनिकेतन बंगालक बोलपुरमे अछि।

4. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत ' एकांकीक लेखक के छथि ?

(ii) बीचवला दृश्यमे पढ़ाई कतय होइत छल ?

(iii) छात्र सभ कोन चीज पर बैसल अछि ?

(iv) शान्तिनिकेतनक अर्थ की होइत अछि ?

(v) चाह-पानक दाम के देलनि ?

5. दीर्घोत्तरीय प्रश्न -

(i) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत' एकांकीमे लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(ii) ग्रामीण समस्या पर एक निबन्ध लिखू।

(iii) 'लेभराह अन्हारमे एकटा इजोत' एकांकी सामाजिक जीवन दृश्य उपस्थित कएने अछि प्रमाणित करू।

6. निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू-

सर्द, हँसैत, धरती, ग्रामीण, इजोत, नि:शुल्क

गतिविधि -

(i) ग्रामीण पाठशालाक एक दृश्य बनाउ।

(ii) ग्रामीण लोकनिक मनोवृत्तिक चित्रण करू।

(iii) विद्यार्थी लोकनिक बीच ग्रामीण स्कूलक दशा पर भाषण प्रतियोगिता कराउ ।

निर्देश -

(i) शिक्षक विद्यार्थी लोकनिसँ ग्रामीण विद्यालय संबंधी कविताक पाठ कराबथि।

(ii) शिक्षक एक छात्रकेँ शिक्षक आ अन्यकेँ विद्यार्थी बना वर्गमे नाटक कराबथि।

(iii) शिक्षक छात्र लोकनिसँ दस गामक प्राथमिक स्कूलक सर्वे कराय ओकर प्रतिवेदन तैयार कराबथि।